प्रेस रिलीज

रमणिका गुप्ता के निधन पर हिंदी विश्वविद्यालय कोलकाता केंद्र में शोक सभा आयोजित

कोलकाता, 27 मार्च

हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका, एक्टिविस्ट और 'युद्धरत आम आदमी' की संपादक रमणिका गुप्ता के निधन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' ने रमणिका गुप्ता को अदम्य जिजीविषा वाली महिला बताया और कहा कि वे आन्दोलनधर्मी लेखिका थीं इसलिए उनकी रचनात्मक सक्रियता गज़ब की थी। उन्होंने हमेशा नई पीढ़ी को प्रोत्साहित किया और युवा लेखकों की एक ऊर्जावान पीढ़ी को आगे बढ़ाया। डॉ सुनील ने कहा कि हिंदी में जिस प्रकार दलित विमर्श को बहस के केंद्र में लाने का श्रेय राजेन्द्र यादव को है, वैसे ही आदिवासी साहित्य चिंतन को हिंदी में स्थापित करने के लिए रमणिका गुप्ता के योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होंने हिंदी में पहली बार पूर्वोत्तर का साहित्य अनुदित करके छापा। उनके सम्पादन में छपे 'युद्धरत आम आदमी' के कई विशेषांक अस्मितावादी साहित्य विमर्श की धरोहर हैं। डॉ सुनील ने कहा कि मैं जेएनयू के अपने छात्र जीवन से ही रमणिका गुप्ता से जुड़ा रहा हूँ और लेखन व आंदोलन के क्षेत्र में रमणिका जी से मैंने बहुत कुछ सीखा-समझा। उनका न होना मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति की तरह है। केंद्र की विजिटिंग फ़ैकल्टी प्रो. चन्द्रकला पाण्डेय ने कहा कि रमणिका जी उनकी अच्छी मित्र रही हैं और वे साहसी लेखिका और महिला थीं। साहित्य-संस्कृति, समाज और राजनीति के लिए उनका योगदान प्रेरणादायक है। केंद्र के अतिथि अध्यापक डॉ. विवेक सिंह ने कहा कि रमणिका जी को मैंने जितनी बार सुना, काफी प्रभावित हुआ। वे बहुत सक्रिय थीं और उनकी आत्मकथाएँ आज की पीढ़ी को जरूर पढ़नी चाहिए। इस शोक सभा में उपस्थित छात्रों-अध्यापकों और कर्मियों ने रमणिका गुप्ता की तस्वीर पर फूल चढ़ाए और अंत में दो मिनट मौन रहकर उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त की।